Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

ज़िला मण्डी के पारम्परिक अनिबद्ध लोकगीत

Meena Kumari

Research Scholar, Department of Music, Himachal Pradesh Univesity, Shimla Himachal Pradesh

शोध सार

ज़िला मण्डी हिमाचल प्रदेश का ज़िला है जो हिमाचल में प्रचलित 12 ज़िलों में से एक है। यह ज़िला अपनी खूबसूरती के लिए मशहूर है। यह बहुत आकर्षक प्रर्यटन नगरी है। यहां बहुत प्रर्यटक घूमने आते हैं तथा मण्डी ज़िला के आकर्षक स्थानों का लुत्फ उठाते हैं। ज़िला मण्डी में बहुत से लोकगीतों का प्रचलन चलता आ रहा है। लोकगीतों में हर प्रकार से निबद्ध व अनिबद्ध रूप में गीत व लोकगीत गाए जाते हैं। अनिबद्ध इस तरह के गीतों में कोई ताल का वादन नहीं होता है। बंधा हुआ न होने के कारण अनिबद्ध गीतों का कोई निश्चित रूप में प्रमाण नहीं होता और न परिधि होती है। उन्हीं गीतों में बंधन व्यवस्था कर पूर्व योजना का अभाव रहता है। ज़िला मण्डी में इसी प्रकार के अनिबद्ध लोकगीतों का भी प्रचलन है लेकिन यह पूर्ण रूप से संरक्षित नहीं ह'ै विभिन्न अवसरों पर यह अनिबद्ध लोकगीत ज़िला मण्डी में गाए जाते है तथा अनिबद्ध लोकगीत यहां पर बहुत प्रचलित है तथा महत्वपूर्ण भी है।

बीज शब्दः मण्डी, पारम्परिक, अनिबद्ध लोकगीत।

भूमिका

हिमाचल प्रदेश का मध्यवर्ती ज़िला मण्डी भूमध्य रेखा से 31^0 03′ से 32^0 04′ उत्तर अक्षांश तथा 76^0 40′ से 77^0 22′ पूर्वी रेखा के मध्य स्थित है। मण्डी ज़िला के प्राकृतिक सौंदर्य तथा घाटियों के मनमोहक सौन्दर्य के कारण ही मण्डियाली सांस्कृतिक एवं ऐतिहसिक परम्पराएं बहुत उज्जवल रही है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि मंण्डी के भौगोलिक सौन्दर्य के कारण ही ऋषि–मुनि इस भूमि की ओर आकर्षित हुए, जिसके फलस्वरूप मण्डी की भूमि को तपोभूमि कहा गया है। यात्रियों व पर्यटकों तथा श्रद्धालु–भक्तों के लिए यह आकर्षक स्थल है। शिकारी देवी का मनोहारी मंदिर जो बहुत सुप्रसिद्ध है। मण्डियाली में देवी–देवताओं के पूजन का विधान अति महत्वपूर्ण है। सर्वाधिक पूजन शिव का ही होता है। मण्डी शहर में त्रिलोक नाथ का मंदिर 1520 ई0 में बना था। भूतनाथ, पंचवस्त्र आदि अनेक मंदिर शिव भगवान के है। यहां पर लोग मंडियाली संस्कृति को आजतक संजोए है। मंडियाली (मण्डी ज़िला) के लोगों का पहनावा साधारण है। पुरुष कुर्ता, कोट, सदरी, बास्केट, पजामा आदि पहनते हैं जबकि स्त्रियां कमीज–सलवार, सुथण और सिर पर चादरू पहनती है। मण्डी ज़िला के संस्कृति की पहचान यहां के लोकगीतों द्वारा भी दर्शाई जाती है। अनिबद्ध लोकगीतों में भी यहां की संस्कृति की झलक दिखाई देती है। अनिबद्ध लोकगीतों की ज़िला मण्डी में अपनी अलग विशेषता है। यह खास अवसरों पर ही गाए जाते हैं। अधिकतर खेतों में काम करते हुए भी यह गीत गाए जाते हैं। जन्म, विवाह संस्कारों में भी यह गीत अधिकतर सुनने को मिलते हैं।''[1]

1 डॉ0 चमन लाल वर्मा, मंडियाली सांस्कृतिक एवं सांगीतिक अध्ययन, पृ0–52

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

अनिबद्ध लोकगीत

निबद्ध शब्द में अ उपसर्ग में इसका विपरीत अर्थ हो जाता है। अनिबद्ध अर्थात् जो व्यवस्थित रूप से बंधा हुआ नहीं होता है, दूसरे शब्दों में अनिबद्ध शब्द में व्यवस्था का अभाव तथा अमर्यादित स्वरूप का भाव व्यक्त होता है। अनिबद्ध शब्द से यह अनुमान होता है कि कोई वस्तु जो है परन्तु उसको किसी चीज़ का बंधन नहीं है, बंधा हुआ न होने से उसका कोई निश्चित परिणाम या परिधि नहीं है तथा उसमें बंधन तथा व्यवस्था का पूर्वयोजना का अभाव है। अतः अनिबद्ध वस्तु से यह संकेत मिलता है कि उसका स्वरूप कुछ अमर्यादित है। अनिबद्ध का स्वरूप असीमित तथा अनियोजित है। संगीत का मूल आधार नाद है, इसकी अभिव्यक्ति स्वरों द्वारा होती है। किसी अन्य बाह्य साधन के रंजकता उत्पन्न करने में स्वर सहायक होते हैं। इसलिए ग्रन्थकार स्वर की परिभाषा, ''स्वरो रंज्ज्यति श्रोतृचित स स्वर उच्यते'' करते है। स्वर या स्वरों द्वारा प्रकट होने वाला रंग स्वाभावतः अनिबद्ध अथवा अमर्यादित होता है। कुछ ग्रंथकार अनिबद्ध शब्द का प्रयोग इसी अर्थ में करते हैं। श्रुति, स्वर, जाति, राग आदि अनिबद्ध श्रेणी में आते हैं। स्वर या स्वर संचार युक्त राग जिसमें कोई बंधन नहीं होता है।

शिमला जनपद तथा मण्डी जनपद में विवाह में गाए जाने वाले गीत, संस्कार गीत जिन्हें स्थानीय भाषा में (लाणे) तथा (लामण) कहा जाता है जो हर लोकगीत को गाने से पहले अनिबद्ध रूप में गाए जाते हैं। यह गीत अनिबद्ध शैली के लोकगीतों के अन्तर्गत आते हैं। कुछ गीत कैंची लगने से शुरू करते है तथा इन विवाह गीतों का भी कोई बंधन नहीं होता है। सभी औरतें मिलकर इन गीतों को गाती हैं। मण्डी जनपद तथा शिमला जनपद में गाए जाने वाले यह विवाह गीत संस्कार के गीत हैं। अब इसमें बहुत परिवर्तन देखने को मिलता है। कुछ खेतों में काम करते हुए गाए जाते हैं यह गीत भी किसी बंधन में नहीं बंधे होते हैं, ये बंधन मुक्त ही होते हैं। इस तरह के लोकगीत अनिबद्ध श्रेणी में ही आते हैं।

ज़िला मण्डी के अनिबद्ध लोकगीत

नैहणी

''लाल रंगे दी सदरी दोहरे भरणे गुजै

हामैं आए थीयै दिल्ला का, तुमे थीयै मुंडौ का उजै।।''[2]

अर्थात् : इस नैणी में प्रेमी, प्रेमिका से कह रहा है कि लाल रंग की सदरी जो उसकी प्रेमिका ने पहनी है इसमें वह बहुत खूबसूरत लग रही है। उसका प्रेमी बहुत दिल से अपनी प्रेमिका से मिलने आया है लेकिन वह उसे समझती नहीं और हर बात में अपने प्रेमी से ऊपर उठने, आगे बढ़ने की कोशिश करती है और उससे बात किए बिना मुड़कर वहां से चली जाती है। जिस वजह से प्रेमी का दिल टूट जाता है।

''पूरोहित (नियूंदरा) निमन्त्रण (मामा–मामी)

पेहला देणा निऊंदरा कुल म्हारे पुरोहता लै

कारजा जो भी म्हारे आया

2 श्री सुरेश कुमार जी से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार, दिनांक–19.03.2021

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

दुजा देणा निऊंदरा मामू देओ शदायै

मामू लै बोलया मेरे हाथ जोड़ा अरजा।।

चीज़ा देणा निऊंदरा बुआ लै, बुआ ले बोलणा हाथा जोड़े ओरजा

तुम बिन होईयो न द्रुवा म्हारे लोणी कारजा आओ।।

बामणा बोलेया मेरे तुम बिन घड़ी न हुआ कारजा''[3]

अर्थात् : सबसे पहले नियंत्रण हमने शिव भगवान को दिया तथा उसके बाद ब्राह्मण को, सबसे पहले निमन्त्रण दिया जो हमारे कार्य को पूरा करने के लिए आया है। दूसरा निमंत्रण हमने मामू–मामी को दिया है उनसे हाथ जोड़ के हमने अर्ज किया है कि उनके बिना विवाह अधूरा है, उनके बिना यह कार्य ही सम्भव नहीं है क्योंकि इसका आरम्भ मामा–मामी के द्वारा ही होता है। तीसरा निमन्त्रण बुआजी को दिया जाएगा तथा बुआजी को हाथ जोड़कर कहना कि उनके बिना सुबह के समय द्रुवा पूजन का कार्य पूर्ण नहीं होगा। द्रुवा का कार्य बुआ द्वारा ही शुरू किया जाता है। इसलिए बुआ का होना बहुत आवश्यक है। पंडित जी कह रहे हैं कि इन सब के बिना कार्य होना असम्भ है। इनके बिना यह कार्य अधूरा है।

भौंहरू

''डेकारे.... काकडो.....

फूले डिकारै औले बै

हो.....ठाण्डे नी रजईयो पाणीए

थारे नी रजियो मिठड़ी बै.....हो.....

सामने बैठी री माणुए रजीयों नी बै.....गौलै बै।''[4]

अर्थात् : इस भौंहरू में लड़की को फूल से तथा लड़के का भौंरों से मिलाप किया गया है कि जिस प्रकार एक भंवरा फूलों पर बार–बार मंडराता है उसे उसकी सुगंध वहां बार–बार खींचती है और वह फूलों पर बार–बार बैठकर उसके रस का आनंन्द लेता है तथा जिस प्रकार एक प्यासा पानी को पीता है और उसकी प्यास नहीं बुझती तो वह फिर पानी पीता है, उसकी प्यास वैसी ही रहती है, उसका मन करता है कि वह ठण्डे पानी को पीते जाए, उसे उस पानी में अलग ही मिठास महसूस होती है। उसी प्रकार लड़का–लड़की से कह रहा है कि आपकी मीठी वाणी से मन नहीं भरता, मन करता दिल करता तुम्हारी मीठी वाणी सुनता जाऊं तुम मेरे सामने बैठी रहो और मैं तुम्हारी मीठी बाते बार–बार सुनता ही रहूं। इस भौंहरू में आकर्षण की बात ज्यादा दिखाई देती है कि प्रेमिका की बातों पर प्रेमी बहुत आकर्षित होता हुआ दिखाई दे रहा है, ऐसा प्रतीत होता है।

[3] श्री सुरेश कुमार जी से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार, दिनांक–19.03.2021
[4] श्रीमति मूर्तू देवी जी से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार, दिनांक–02.03.2021

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

''भौरी चीला री ज़ोखटी

आखड़ो भौरूए.....धुंए ले.....

हो....पाखले पौढुआ.... देशा ले....लाजे हुंदे

गो.....शौरमे बै....हो....म्हारे भी अपुले

लागदी हो.....हुंदे.....शोर्मे मुंए....बै।।''[5]

अर्थात् : चील की लकड़ी से भरी हुई अंगेठी जिसमें चील की लकड़ी से बनी हुई पतली–पतली छोटी–छोटी टहनियां जल रही है तथा आंखों में धुआं तथा पानी भरा हुआ है। बेगाने देश में न जाने हम क्यों आ गए क्या ढूढ़ने आए, हम लाज शर्म से पानी–पानी हो गए। समझ नहीं आ रहा कहां जाएं, हम ठहरे गांव के भोले–भाले शर्मीले लोग, हमें शर्माने के सिवा कुछ कहां आता है। कहने का तात्पर्य है कि गांव के लोग शर्मीले होते हैं। उनका अंदाज ही ऐसा होता है इसलिए अनजाने शहर में आकर वो थोड़ा सहम से गए है। झिझक से गए है किसी से खुलकर बात नहीं कर पाते।

''धारा भी गेशरी देवीए हो....

अठराह गुना ऊँचा लो.....हो...

शिरू पुजो या छेलिये.....हो

म्हारा कोरी भी मोनोरा म्हारे भी तेती हो कुहजा

मौना रा....वे ऊँचा.....''[6]

अर्थात् : जिस तरह ज़िला शिमला में अनिबद्ध लोकगीत में लामण गाया जाता है जो देवी मां के लिए गाया जाता है, इसी तरह यह मण्डी ज़िला का भौंरू देवी मां की प्रसन्नता के लिए गाया जाता है कि ऊँचे शिखरो पर बसी हुई मां देवी अठारह गुना ऊँचा मंदिर है तेरा मुझे बकरे के बच्चों की बलि चढ़ाऊँगा बस हमारा हमेशा कल्याण करना बरकत करना तथा मन को हमेशा शुद्ध और पवित्र बनाए रखना।

शादी में गाए जाने वाले शांदे (सवाल–जवाब)

''कुणी देई आंगणै रेखा, कुणी देई औरे रेखा

आमे देई आंगणै चौका, बाबुए देई का ओरे रेखा

जुगे जीऊए लौणी आया मेरे खाओले

जुगी से कौरा सजाया, कुणी देई ओरे रेखा

कुणी देई आंगणे चौका, कुणी देई ओरे रेखा

[5] श्रीमति मूर्तू देवी जी से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार, दिनांक–02.03.2021
[6] श्री सुरेश कुमार जी से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार, दिनांक–19.03.2021

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

भाभी देई आंगणे चौका, भाई देई आंगणे रेखा''[7]

अर्थात् : किस ने आंगन को इतना अच्छा सजाया है किसने आंगन को चारो तरफ से सजाया जवाब में यह कहा जाता है कि मम्मी ने आंगन में चौका सजाया है तथा बाबुजी ने आंगन के चारों तरफ रेखा खींची है। मां–बाबुजी का धन्यवाद करते हुए कहते है कि मेरे अम्मा–बाबू जुग जीये हमेशा खुश रहे तथा आबाद रहें। उन्होनें मेरे आंगन चौके को कितना खूब सजाया है तथा कितनी सुंदर रेखा खींची है। लड़का फिर पूछता है कि किसने मेरे आंगन को और ज्यादा सजाया है तथा फिर दूसरी रेखा खींची है। जवाब में कि इस बार भाभी ने चौका सजाया है तथा भाई ने आंगन में रेखा खींची है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि ज़िला मण्डी में अनिबद्ध लोकगीतों का भी बहुत अधिक प्रचलन है। अनिबद्ध लोकगीतों को विभिन्न अवसरों पर गाया जाता है लेकिन संगत के लिए इसके साथ किसी भी तरह के वाद्यों का प्रयोग नहीं किया जाता है क्योंकि यह ताल से रहित गीत होते हैं। लोक कलाकारों द्वारा अपने अलग अंदाज में इन गीतों को गाया जाता है। इसलिए कलाकारों से यह अनिबद्ध लोकगीत सुनने में बहुत ही मधुर प्रतीत होते हैं। इसलिए यह निशचित रूप से कहा जा सकता है कि अनिबद्ध लोकगीतों का भी यहां बहुत महत्व है।

सन्दर्भ

वर्मा, चमन लाल. (1999). मंडियाली सांस्कृतिक एवं सांगीतिक अध्ययन. निर्मल पब्लिकेशन्स दिल्ली.

साक्षात्कार

श्रीमति मूर्तू देवी, गांव बखारी तहसील करसोग ज़िला मण्डी हि0 प्र0।
श्री सुरेश कुमार, गांव पाटी डाकघर काओ तहसील करसोग ज़िला मण्डी हि0 प्र0।

[7] श्री सुरेश कुमार जी से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार, दिनांक–19.03.2021